आत्मसंप्रत्यय और शैक्षिक सफलता कला...,ान एवं वाणिज्य स्नातकों के आत्मबोध का एक विश्लेषण (1) (1).docx

by Maninder Naro

Submission date: 27-Aug-2025 08:51PM (UTC-0500)

Submission ID: 2710452297

File name: आत्मसंप्रत्यय_और_शैक्षिक_सफलता_कला..._ान_एवं_वाणिज्य_स्नातकों_के_आत्मबोध_का_एक_विश्लेषण_1_1_.docx (88.48K)

Word count: 9518

Character count: 45074

आत्मसंप्रत्यय और शैक्षिक सफलता: कला, विज्ञान एवं वाणिज्य स्नातकों के आत्मबोध का एक विश्लेषण

डॉ बृजेश कुमार मिश्र
सह आचार्य
एवं
प्रकाश चन्द्र कसेरा
सहायक आचार्य
बयालसी महाविद्यालय, जलालपुर, जौनपुर
(संबद्ध वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश)
+91-8318138580
prakashkasera786@gmail.com

आत्मसंप्रत्यय व्यक्ति की मानसिक संरचना का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो न केवल उसकी स्वयं की धारणा को प्रभावित करता है, बल्कि उसके व्यवहार, निर्णय लेने की क्षमता और शैक्षिक सफलता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह अध्ययन कला, विज्ञान और वाणिज्य वर्ग के स्नातक छात्रों के आत्मसंप्रत्यय की तुलना करके यह समझने का प्रयास करता है कि विभिन्न शैक्षिक क्षेत्रों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आत्मसंप्रत्यय में क्या भिन्नताएँ हैं और ये भिन्नताएँ किन सामाजिक-सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक कारकों से प्रभावित होती हैं। अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि आत्मसंप्रत्यय केवल व्यक्तिगत मानसिक धारणा नहीं, बल्कि पारिवारिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक उपलब्धियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ और शिक्षण वातावरण से निर्मित होता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण सामाजिक ढाँचे वाले देश में, जहाँ शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित न रहकर सामाजिक गतिशीलता और आत्मविकास का साधन भी है, वहाँ यह आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न शैक्षिक वर्गों के छात्रों के आत्मसंप्रत्यय की संरचना को समझा जाए। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि विज्ञान वर्ग के छात्रों में कथित स्व और आदर्शात्मक स्व अपेक्षाकृत अधिक विकसित था, जबकि कला और वाणिज्य वर्ग के छात्रों में यह अपेक्षाकृत निम्न पाया गया। सामाजिक स्व का अकादमिक क्षेत्र से सीधा संबंध नहीं पाया गया, जो इंगित करता है कि आत्मसंप्रत्यय केवल शैक्षणिक उपलब्धियों पर आधारित नहीं होता, बल्कि बाहरी सामाजिक अनुभव भी इसे प्रभावित करते हैं। लिंग के आधार पर कथित स्व में कोई विशेष अंतर नहीं था, लेकिन आदर्शात्मक स्व और सामाजिक स्व में छात्र एवं छात्राओं के बीच अंतर देखा गया, विशेष रूप से विज्ञान वर्ग में सामाजिक स्व की भिन्नता अधिक थी। अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि आत्मसंप्रत्यय और शैक्षिक सफलता के बीच घनिष्ठ संबंध है–जो छात्र आत्मसंप्रत्यय में सकारात्मक थे, उन्होंने अपनी अपेक्षाओं से अधिक प्रदर्शन किया, जबकि नकारात्मक आत्मसंप्रत्यय वाले छात्र अपनी वास्तविक क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर सके। अध्यापक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह शिक्षकों को यह समझने में सहायता करता है कि आत्मसंप्रत्यय कैसे छात्रों की सीखने की क्षमता, आत्म-प्रेरणा और शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है। यह अध्ययन शिक्षा नीति-निर्माताओं और शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में कार्य कर सकता है, जिससे वे आत्मसंप्रत्यय को मजबूत करने के लिए शिक्षण पद्धतियों में सुधार कर सकें, समावेशी शिक्षण रणनीतियाँ अपना सकें और व्यक्तिगत परामर्श की व्यवस्था कर सकें। कमजोर आत्मसंप्रत्यय वाले छात्रों के लिए विशेष मार्गदर्शन

की आवश्यकता होती है, जिससे वे अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान सकें और शैक्षणिक तथा व्यक्तिगत जीवन में सफलता प्राप्त कर सकें। यदि शिक्षा प्रणाली आत्मसंप्रत्यय के निर्माण को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम और शिक्षण पद्धतियों को विकसित करे, तो यह छात्रों के समग्र विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि आत्मसंप्रत्यय केवल व्यक्तिगत धारणा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और शैक्षिक कारकों से प्रभावित होता है, और इसे विकसित करने के लिए शिक्षकों एवं नीति-निर्माताओं को संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिससे शिक्षा व्यवस्था अधिक समावेशी और प्रभावी बन सके।

मुख्य शब्द: *आत्मसंप्रत्यय, आदर्शात्मक स्व, कथित स्व,सामाजिक स्व, शैक्षिक क्षेत्र*

प्रस्तावना

आत्मसंप्रत्यय निर्माण मनुष्य जीवन की अंतहीन यात्रा है जिसका प्रारंभ शिशु जन्म के समय उस शून्यता से होती है, जब वह न तो स्व संबंधी जैसी किसी धारणा या अनुभूति से युक्त होता है और न ही अन्य वस्तु से पृथकता का बोध होता है। अन्य वस्तु से पृथकता का संवेदन तथा अन्य जनों से पृथकता का बोध ही आत्म प्रत्यय विकास का प्रस्थान बिंदु है। उम्र बढ़ने के साथ शिशु का दायरा माता-पिता, परिवारजन से मित्र मंडली एवं विद्यालयी जीवन में सहपाठी एवं साथी छात्रों के साथ बढ़ता जाता है जो बालक के आत्म संप्रत्यय को अवश्य ही प्रभावित एवं विनिर्मित करता है। इस प्रकार आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है।

आत्म संप्रत्यय का शारीरिक घटक (physical self-concept), आत्म संप्रत्यय का मनोवैज्ञानिक घटक (psychological component of self-concept) तथा आत्म संप्रत्यय का अभिवृत्ति संबंधी घटक (attitudinal component) विनिर्मित, पोषित, परिवर्तित एवं परिमार्जित होती रहती है। अनेकानेक कारक जो शारीरिक विकास से संबंधित है, सामाजिक परिवेश से संबंधित है, सांस्कृतिक वातावरण से संबंधित है, आत्म संप्रत्यय के विकास में अहम योगदान देते हैं। आत्म संप्रत्यय व्यक्ति के व्यक्तित्व से अधिक व्यापक है। वह व्यक्ति के भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों से संबंधित है। आत्म संप्रत्यय के तीन घटकों में सम्मिलित बातों को इस प्रकार प्रदर्शित किया जा सकता है-

आत्म संप्रत्यय के भौतिक घटक

1. शरीर के दिखावट संबंधी प्रतिमा

2. शरीर के बनावट एवं प्रत्यक्षण के प्रभाव संबंधी प्रतिमा

3. शरीर के आकर्षण संबंधी प्रतिमा

4. लिंग उपयुक्तता संबंधी प्रतिमा

5. दूसरों की दृष्टि में शारीरिक अंगों एवं व्यवहार को सम्मान प्रदान करने संबंधी स्व प्रतिमा (Self Image)

आत्म संप्रत्यय के मनोवैज्ञानिक घटक

1. व्यक्ति की अपनी विशिष्ट विशेषताओं के बारे में अवधारणा

2. योग्यता

3. पृष्ठभूमि

4. प्रस्थान बिंदु, भविष्य एवं जीवन में समायोजन संबंधी विशेषताएं- साहस, स्वातंत्र्य, ईमानदारी, आत्मविश्वास

आत्म संप्रत्यय का अभिवृत्ति संबंधी घटक

1. स्वयं के बारे में भावनाएं

2. वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाओं के प्रति दृष्टिकोण

3. स्व उपयुक्तता एवं स्वयं की महत्ता संबंधी भावनाएं

4. आत्मसम्मान, अहम् एवं शर्मिंदगी संबंधी दृष्टिकोण

5. विश्वास, मूल्य, आदर्श, आकांक्षा, प्रतिबद्धता जिनसे जीवन दर्शन निर्मित होता है।

आत्म प्रत्यय (Self-concept) से व्यक्तित्व का गहरा सम्बन्ध है। अत: व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन से भी आत्म सम्प्रत्यय गहनता से जुड़ा (Deepely rooted) हुआ है। व्यक्ति स्व प्रत्यय से प्रशासित परिचालित होता है।

विविध क्षेत्रों में हुए शोध अध्ययन व्याख्यायित करते हैं कि जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में निर्मित एवं बाद के अनुभवों द्वारा प्रबलित आत्म सम्प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार की गुणवत्ता एवं लोगो के प्रति प्रतिक्रिया एवं परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रिया को कैसे प्रभावित करती है। ऐसे बालक जो परिवार या सहपाठी या मित्र मंडली द्वारा मंद या कमजोर घोषित होते हैं एवं तदनुरूप आत्म प्रत्यय निर्मित कर लेते हैं ऐसे बालक विद्यालय में अपनी वास्तविक क्षमता के अनुरूप उपलब्धि हासिल न करके, कमतर उपलब्धि हासिल करते हैं। जबकि कमतर योग्यता बाले बालक शिक्षकों की अपेक्षाओं के अनुरुप उच्च उपलब्धि हासिल करते हैं, यदि उनमें अनुकूल आत्म प्रत्यय होता है ,अर्थात यदि आत्म सम्मान एवं दक्षता सम्बधी अनुकूल आत्म प्रत्यय विकसित होता है।

कालेज विद्यार्थियों के अध्ययन प्रदर्शित करते हैं कि महाविद्यालयों में विद्यार्थियों का समायोजन उनके आत्मसम्प्रत्यय से प्रभावित होता है एवं पर्यावरण में परिवर्तन के परिणामस्वरूप आत्म प्रत्यय में हुए परिवर्तन से प्रभावित होता है। आत्महीनता, अयोग्यता एवं अपर्याप्तता की भावना जो विशिष्ट परिवेश द्वारा निर्मित होता है आत्म सम्प्रत्यय को रूप-रंग प्रदान करता है। ऐसे बालक सहपाठियों के दवाव के वावजूद अपने को निष्कासित (Rejected) या समाज के विरुद्ध की भावना के प्रति नगण्य प्रतिरोध रखते हैं। जबकि वे किशोर जो अधिक अनुकूल आत्म प्रत्य रखते हैं जो परिवार के स्नेह एवं भावना की स्वीकृति का प्रतिफल है, सहपाठियों के दबाव के बावजूद उनका अनुकूल आत्म प्रत्यय अपराधिक वृत्ति के प्रति रुकावट (Insulator) का कार्य करता है।

इसी प्रकार व्यक्ति के व्यावसायिक निर्णय भी अहं केन्द्रित (Ego involved) होते हैं। व्यक्ति उन व्यवसायों का चयन करता है जो वह कर सकता है एवं जिनसे उसे अधिकतम आत्म संतुष्टि मिलती हो। वह व्यक्ति को निम्न आत्म प्रत्यय (poor self-concept) रखता है परिणाम स्वरूप ईर्ष्यालु (Shy) हो, वह उस व्यवसाय का चयन नहीं करेगा जिनमें लोगों से मिलना पड़े तथा उसकी सफलता की तुलना किया जाए। इसी प्रकार जो अपने वातावरण में खुश एवं सुरक्षित महसूस करता है वह अन्य समुदाय में जाने का प्रतिरोध करेगा यद्यपि वहाँ विकास के अधिक अवसर प्राप्त हो।

प्रस्तुत अध्ययन में कला, विज्ञान, एवं वाणिज्य वर्ग के अंतिम वर्ष (Final Year) के अध्ययनरत स्नातकों को सम्मिलित किया गया है। स्नातक स्तर पर विषयों के चुनाव में उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन हेतु चुने गये विषयों एवं उसमें अर्जित सफलता का महत्वपूर्ण योगदान होता है। स्नातक स्तर पर संस्थानों में प्रवेश की सुलभता भी विषय चयन का एक कारण है। यदि प्रवेश परीक्षा द्वारा स्नातक स्तर में प्रवेश मिलता है तो प्रवेश परीक्षा में प्राप्त प्राप्तांक/ मेरिट भी विषय के चयन का आधार बन जाती है। शिक्षार्थी की आर्थिक-सामाजिक एवं पारिवारिक स्थिति एवं संस्थाओं में प्रवेश की उपलब्धता तथा सुरक्षा भी विषय चुनने का आधार बनती है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी की योग्यता, रुचि, आकांक्षा एवं विगत उपलब्धियां भी विषय के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं।

विषय चयन के उपरान्त स्नातक स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय वर्ष की उपलब्धि के आधार पर या रुचि के आधार पर छात्र तृतीय वर्ष में दो विषयों का चयन करता है या आनर्स विषय का चयन करता है। इस प्रकार अकादमिक क्षेत्र के चयन में छात्र /छात्रा की पूर्व उपलब्धि/ सफलता, सामाजिक आर्थिक स्थिति, प्रवेश परीक्षा की मेरिट, संस्थाओं की उपलब्धता, सुरक्षा, आकांक्षा, विषय अध्ययन के उपरान्त कैरियर की संभावनायें, रोजगार आदि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं। उक्त कारकों का आत्म सम्प्रत्यय के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामाजिक सांकृतिक परिवेश में लोग विद्यार्थी की उपलब्धि, योग्यता ,क्षमता, दक्षता, सामाजिकता आदि के बारे में अपनी राय रखते हैं। माता-पिता, शिक्षक, सहपाठी, एवं समाज के वे लोग जिनसे छात्र सर्वाधिक प्रभावित होता है, उनकी राय भी छात्र को प्रभावित करती है। इस प्रकार सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी छात्रों के अध्ययन क्षेत्र को प्रभावित करता है। यही सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश स्नातक विद्यार्थियो के विषय चयन एवं आत्म सम्प्रत्यय को साथ-साथ प्रभावित करता है।

विद्यार्थी के जीवन दर्शन को निर्मित करने वाली परिस्थितियाँ, मूल्य, आदर्श, विश्वास,आकांक्षा, प्रतिबद्धता, आत्म सम्मान, अनुभूतियाँ भी विषय चयन के साथ ही साथ आत्म सम्प्रत्यय को प्रभावित करती हैं।

यह सत्य है कि सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में व्यक्ति का आत्म सम्प्रत्यय विकसित होता है। जहां तक स्नातक विद्यार्थियों का प्रश्न है, सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश संबंधी परिस्थितियां, स्नातक स्तर के विषयों के चुनाव में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। अत : स्नातक विद्यार्थियों के अकादमिक क्षेत्र एवं उनके आत्मसम्प्रत्यय के सम्बन्धों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है। अतः कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातको के आत्म सम्प्रयय (यथा - कथित आत्म संप्रत्यय (Perceived Self) , सामाजिक आत्म संप्रत्यय (Social Self), एवं आदर्शात्मक आत्मसंप्रत्यय (Ideal Self) में समता है या वैविध्य / विविधता है, का अध्ययन समीचीन है।

भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में स्नातक छात्र -छात्राओं के आत्म संप्रत्यय सम्बन्धी अध्ययन का सर्वथा अभाव है। जिन बातों से छात्रों के अकादमिक क्षेत्र का निर्धारण हो रहा है, यदि वही घटक आत्म सम्प्रत्य को भी निर्धारित कर रहे हैं तो अकादमिक क्षेत्र के आधार पर आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन प्रकारान्तर से सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन है।

यद्यपि स्नातक अंतिम वर्ष तक पहुंचते-पहुँचते छात्र को विविध स्तरों पर प्राप्त सफलता-असफलता, कटु एवं मीठे अनुभवों तथा स्व धारणा द्वारा तथा उसके बारे में लोक धारणा (समाज, परिवार, सहपाठी, मित्र मंडली की धारणा) आदि द्वारा आत्म सम्प्रत्यय निर्मित हो चुका होता है। ऐसी स्थिति में विविध अकादमिक क्षेत्रों में अध्ययनरत छात्रों के आत्म संप्रत्यय की यथास्थिति तथा तुलना समीचीन है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

मलिक, डाक्टर रंजू (2015) ने अपने अध्ययन "द स्टडी आफ सेल्फ कान्सेप्ट आफ टेन्थ क्लास स्टूडेन्ट आफ वर्किंग एंड नान वर्किंग मदर " में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किया

(i) कामकाजी माताओं के छात्रों एवं छात्राओं के आत्मसम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(ii) गृहणी माताओं के छात्रों एवं छात्राओं के आत्म संम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(iii) सरकारी विद्यालयों या निजी विद्यालयों में अध्ययनरत 10 वीं कक्षा के छात्रों एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में कोई सार्थक, अन्तर नहीं पाया गया।

नायक, डा० प्रमोद कुमार एवं शर्मा, श्रीमती सुनीला (2017) ने "ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि तथा आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन" किया। अध्ययन का निष्कर्ष निम्नवत है

(i) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि आत्म सम्प्रत्यय में कोई अंतर नहीं पाया गया ।

गोयल, प्रतिभा एवं मिश्रा, डा० किरण (2019) ने, "माध्यमिक स्तर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छालों के आत्म सम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन" में निष्कर्षतः पाया कि

(i) शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के शारीरिक, सामाजिक एवं बौद्धिक प्रत्यय में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि स्वभावगत, नैतिक एवं समग्र आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ।

(ii) शहरी क्षेत्र के छात्रों का सामाजिक, शैक्षिक व बौद्धिक आत्म संप्रत्यय ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया जबकि ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में शारीरिक आत्म प्रत्यय शहरी क्षेत्र के छात्रों से बेहतर पाया गया।

गुप्ता, राजेन्द्र कुमार (2017) ने अपने अध्ययन में "कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के सेवा पूर्व अध्यापकों के आत्म संप्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" में निष्कर्षतः पाया कि कला संकाय व विज्ञान संकाय के सेवा पूर्व अध्यापकों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति लगभग समान है।

अग्रवाल, डा० माधवी एवं तिमोतिया, डा अनिल कुमार (2019) ने अपने अध्ययन " सेल्फ कान्सेप्ट आफ सेकेण्डरी लेवल स्टूडेन्ट इन डेल्ही एण्ड डेल्ही (एन सी आर)" में निम्नवत निष्कर्ष प्राप्त किये

(i) लिंग एवं विद्यालय प्रकार के आधार पर विद्यार्थियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

(ii) शहरी विद्यार्थियों का आत्म सम्प्रत्यय ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

आर. मुथियालगन मार्टिन एवं के माहेश्वरी (2022) ने अपने अध्ययन सिग्नीफिकेन्स आफ सेल्फ कान्सेप्ट अमोंग एडोलसेंट स्कूल स्टूडेन्ड में निम्न लिखित निष्कर्ष प्राप्त किये -

प्रस्तुत अध्ययन में आत्म सम्प्रत्यय के 6 पक्षों यथा- व्यवहार, चिन्ता, बौद्विक स्थिति, प्रसिद्धि, शारीरिक बनावट एवं प्रसन्नता का अध्ययन किया गया । कुल न्यादर्श में से 46 प्रतिशत मध्यम, 26 प्रतिशत निम्न तथा 28 प्रतिशत उच्च आत्म सम्प्रत्यय प्रदर्शित करते हैं।

चार, सजल कुमार एवं करमाकर, प्रोदीप एवं महतो, सुशंता एवं अधिकारी, समीर रंजन द्वारा किये गये अध्ययन 'अ डिस्क्रिप्टिव सर्वे ऑन द सेल्फ कान्सेप्ट आफ द स्कूल गोइंग एडोलसेंट आफ पुरुलिया डिस्ट्रिक्ट" में निम्नलिखित निष्कर्ष पाया गया-पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिला के किशोरों में उच्च आत्म सम्प्रत्यय पाया गया।

राय, स्मृतिकाना एवं साहा, प्रोफेसर कौर (2024) के द्वारा किये गये अध्ययन "एक्सप्लोरिंग द सेल्फ कान्सेट आफ पोस्ट ग्रेजुएट लेवल स्टूडेंट : ए क्रिटिकल स्टडी में लिंग एवं स्ट्रीम के आधार पर परास्नातक विद्यार्थियों के संप्रत्यय में कोई सार्थक उत्तर नहीं पाया गया जबकि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्म संप्रत्यय में सार्थक उत्तर पाया गया।

उपर्युक्त अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के आत्म सम्प्रत्यय सम्बन्धी अध्ययन अत्यन्त अल्प है। कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के स्नातकों के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व के अन्तर सम्बन्धी अध्ययन भी अल्प है। इसी प्रकार उच्च समायोजन वाले स्नातकों के आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व के अन्तर तथा निम्नतर समायोजन वाले स्नातकों के आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व के अन्तर में सार्थक अन्तर सम्बन्धी अध्ययन भी अत्यल्प है । इसके अतिरिक्त आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व के अन्तर के आधार पर समायोजन का पूर्व कथन (Prediction) सम्बन्धी अध्ययन भी अति सीमित है।

उद्देश्य -

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य है.

1. कला, विज्ञान एव वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'आदर्शात्मक स्व' का अध्ययन ।
2. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'सामाजिक स्व' का अध्ययन ।
3. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित' स्व '(Perceived Self) का अध्ययन ।
4. 'आदर्शात्मक स्व' (Ideal self) का अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (Academic Streams) पर निर्भरता का अध्ययन

5. 'सामाजिक स्व' का अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (Academic Stream) पर निर्भरता का अध्ययन

6. 'कथित स्व' का अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (Academic Streams) पर निर्भरता का अध्ययन ।

7. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व का तुलनात्मक अध्ययन

8. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व का तुलनात्मक अध्ययन।

9. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातको के आदर्शात्मक व एवं सामाजिक स्व का तुलनालक अध्ययन।

10. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व का तुलनात्मक अध्ययन

11. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व का तुलनात्मक अध्यया।

12. विज्ञान वर्ग के अध्ययारत स्नातकों के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व का तुलनात्मक अध्ययन।

13. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व का तुलनात्मक अध्ययन।

14. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व का तुलनात्मक अध्ययन

15. वाणिज्य वर्ग के, अध्ययनरत स्नातकों के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व का तुलनात्मक अध्ययन

16. अध्ययनरत कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं , विज्ञान स्नातक छात्र एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक, छात्र एवं छात्राओं के "कथित स्व" का तुलनात्मक अध्ययन ।

17. अध्ययनरत कला स्नातक छात्र एव छात्राओं, विज्ञान स्नातक छात्र एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के "आदर्शात्मक स्व " का तुलनात्मक अध्ययन ।

18. अध्ययनरत कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं, विज्ञान स्नातक छात्र एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के "सामाजिक स्व' का तुलनात्मक अध्ययन

19. 'कथित स्व', 'आदर्शात्मक स्व' एवं 'सामाजिक स्व' के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन ।

शोध-उपकरण -

प्रस्तुत अध्ययन में प्रो० प्रतिभा देव द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत (सेल्फ कॉन्सेप्ट रेटिंग स्केल) का उपयोग किया गया है।

शोध-प्रविधि -

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। वाराणसी मण्डल के विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक अंतिम वर्ष के छात्रों पर आत्म सम्प्रत्यय परीक्षण प्रशासित करके आंकड़ों का संग्रह किया गया है।

शोध परिकल्पना -

1. कथित स्व (Perceived self) अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (Academic Streams) पर निर्भर नहीं होता है।
2. आदर्शात्मक स्व (Ideal self) अध्ययनरत स्नातकों के, अकादमिक क्षेत्र (Academic streams) पर निर्भर नहीं होता है।
3. सामाजिक स्व (Socialself) अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (Academic stream) पर निर्भर नहीं होता है।
4. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' एवं आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' एवं सामाजिक स्व' में सार्थक अतंर नहीं है।
6. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'आदर्शात्मक स्व एवं 'सामाजिक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
7. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
8. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
9. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातको के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
10. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
11. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
12. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।
13. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
14. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
15. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
16. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
17. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
18. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
19. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
20. विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।
21. वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में सार्थक अत्तर नहीं है।
22. अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व के मध्य सार्थक सहसम्वन्ध नहीं है।

न्यादर्श -

वाराणसी मण्डल के विविध जनपदों में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थाओं से स्नातक अंतिम वर्ष में अध्ययनरत कला, विज्ञान एव वाणिज्य वर्ग के कुल 450 छात्रों एवं छात्राओं को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।

क्लस्टर प्रतिचयन विधि का उपयोग न्यादर्श चयन में किया गया है।

प्रतिचयन में सम्मिलित छात्र -छात्राओं का विवरण निम्नवत है -

कला वर्ग	स्नातक छात्र	75
कला वर्ग	स्नातक छात्राएँ	75
विज्ञान वर्ग	स्नातक छात्र	75
विज्ञान वर्ग	स्नातक छात्राएँ	75
वाणिज्य वर्ग	स्नातक छात्र	75
वाणिज्य वर्ग	स्नातक छात्राएँ	75
	कुलयोग	450

अध्ययन का परिसीमन

1. प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर पर अंतिम वर्ष में अध्ययनरत कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र एव छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

2. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के (प्रत्येक मे 150 जिसमें 75 छात्र एवं 75 छात्राएँ) समान छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन में आत्मसम्प्रत्यय के तीन पक्षों 'कथित स्व, सामाजिक स्व एवं आदर्शात्मक स्व का ही अध्ययन किया गया है।

परिणाम -

प्रस्तुत अध्ययन का परिणाम अग्रवर्णित है-

सारणी -1- कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'आदर्शात्मक स्व' के विवरण हेतु सारणी

	आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)							
स्नातक	अति उच्च	उच्च	औसत से उच्च	औसत	औसत से निम्न	निम्न	अति निम्न	योग
कला वर्ग	25	22	18	43	23	17	02	150
	16.67 %	14.67%	12%	28.67%	15.33%	11.33%	1.33%	100%
विज्ञान वर्ग	15	17	32	57	24	01	04	150
	10%	11.33%	21.33%	38%	16%	0.67%	2.67%	100%
	18	14	21	58	26	09	04	150

वाणिज्य वर्ग	12%	9.33%	14%	38.67%	17.33%	6.0%	2.67%	100%
योग	58	53	71	158	73	27	10	450
	12.89%	11.78%	15.78%	35.11%	16.22%	6%	2.22%	100%

विश्लेषण एवं व्याख्या- सारणी संख्या-1 में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों का आदर्शात्मक स्व के विविध स्तरों पर संख्या एवं प्रतिशत प्रदर्शित है। आदर्शात्मक स्व गुणों का समुच्चय (set of attributes) होता है जिसे लोगों की प्रत्याशा कहा जाता है। अर्थात यह उद्देश्यों एवं महत्वाकांक्षाओं को प्रकट करता है। कला वर्ग के स्नातकों में आदर्शात्मक स्व के स्तरों- अतिउच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अतिनिम्न का प्रतिशत क्रमश: 16.67%, 14.67%, 12%, 28.67%, 15.33%, 11.33% एव 1.33% है। इसी प्रकार विज्ञान वर्ग के स्नातकों में अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न आदर्शात्मक स्व का प्रतिशत क्रमशः 10%, 11.33%, 21.33%, 38%, 16%, 0.67% एवं 2.67% है।

वाणिज्य वर्ग के, अध्ययनरत स्नातकों में आदर्शात्मक स्व के अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न स्तरों का प्रतिशत क्रमश: 12%, 9.33%, 14%, 38.67%,17.33%, 6% एवं 2.67% है।

कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातको के आदर्शात्मक स्व को समग्रता से देखने पर स्पष्ट है कि अति उच्च, उच्च एवं औसत से उच्च आदर्शात्मक स्व वाले स्नातकों का प्रतिशत क्रमश: 12.89%, 17.78% एवं 15.78% है तथा औसत, औसत से निम्न, निम्न तथा अति निम्न आदर्शात्मक स्व वाले स्नातकों का प्रतिशत कमश: 35.11%, 16.22%, 6%. एवं 2.22% है।

सारणी-2. कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'सामाजिक स्व' के विवरण हेतु सारणी ।

	सामाजिक स्व (Social Self)							
स्नातक	अति उच्च	उच्च	औसत से उच्च	औसत	औसत से निम्न	निम्न	अति निम्न	योग
कला वर्ग	04	11	28	68	35	03	01	150
	2.67%	7.33%	18.67%	45.33%	23.33%	2%	0.67%	100%
विज्ञान वर्ग	04	15	21	63	41	06	00	150
	2.67%	10.0%	14.0%	42%	27.33%	4%	0%	100%
वाणिज्य वर्ग	01	11	24	61	43	08	02	150
	0.67%	7.33%	16.0%	40.67%	28.67%	5.33%	1.33%	100%
योग	09	37	73	193	119	17	02	450
	2.0%	8.22%	16.22%	42.89%	26.44%	3.78%	0.44%	100%

विश्लेषण एवं व्याख्या -सारिणी संख्या -2 में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'सामाजिक स्व' के स्तरों पर संख्या एवं प्रतिशत प्रदर्शित है। 'सामाजिक स्व' व्यक्ति की सामाजिक स्वीकृति (Social approval) के बारे में अवधारणा या सोच प्रदर्शित करता है। यह व्यक्ति की सामाजिक स्वीकृति

के बारे में स्वयं की सोच होती है। कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातको में अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न सामाजिक स्व वाले छात्रों का प्रतिशत क्रमशः 2.67%, 7.33%, 18.67%, 45.33%, 23.33%, 2% एवं 0.67% है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों में अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अतिनिम्न सामाजिक स्व वाले छात्रों की संख्या क्रमशः 2.67%, 10%, 14%, 42%, 27.33%, 4%, 0% है।

इसी प्रकार वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के सामाजिक स्व के विविध स्तरों यथा अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न पर प्रतिशत क्रमशः 0.67%, 7.33%, 16%, 14.67%, 40.67%, 28.67%,5.33% एवं 1.33%. है। सारणी-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न 'सामाजिक स्व' वाले कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के अध्ययनरत स्नातकों का प्रतिशत समग्रता में क्रमशः 2%, 8.22%, 16.22%, 42.89%, 26.44% 3.78%. एवं 0.44% है।

सारणी-3- कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' (Perceived Self) के विवरण हेतु सारणी

	कथित स्व (Perceived Self)							
स्नातक	अति उच्च	उच्च	औसत से उच्च	औसत	औसत से निम्न	निम्न	अति निम्न	योग
कला वर्ग	15	34	43	49	07	02	00	150
	10%	22.67%	28.67%	32.67%	4.67%	1.33%	0%	100%
विज्ञान वर्ग	21	44	45	29	06	04	01	150
	14%	29.33%	30%	19.33%	4%	2.67%	0.67%	100%
वाणिज्य वर्ग	10	26	57	35	16	03	03	150
	6.67%	17.33%	38%	23.33%	10.67%	2%	2%	100%
योग	16	104	145	113	29	09	04	450
	10.22%	23.11%	32.22%	25.11%	6.44%	2%	0.89%	100%

विश्लेषण एवं व्याख्या -सारणी-3 में कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' (Perceived self) के विविध स्तरों पर संख्या एवं प्रतिशत प्रदर्शित है। 'कथित स्व' व्यक्ति का स्वयं के विचार, भावनाओं, अनुभवों एवं पहचान (Identity) से अवगत होने एवं समझ को प्रदर्शित करता है। इसमें अन्य व्यक्ति द्वारा जो प्रत्यक्षण किया जाता है उसके सम्बन्ध में स्वयं का विश्वास (Belief) भी शामिल होता है। कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' के विविध स्तरों यथा अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न तथा अति निम्न स्तरों पर प्रतिशत क्रमशः 10%, 22.67% , 28.67%, 32.67%, 4.67%, 1.33% एवं शून्य प्रतिशत है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के 'कथित स्व' के अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न और अति निम्न स्तरों पर छात्रों की संख्या (प्रतिशत मे) क्रमशः इस प्रकार है- 14%, 29.33%, 30%, 19.33%, 4%, 2.67 % तथा 0.67% है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों में अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से

निम्न, निम्न तथा अति निम्न 'कथित स्व' वाले स्नातकों की संख्या (प्रतिशत में) क्रमशः 6.67%, 17.33%, 38%, 23.33%., 10.67%, 2% एवं 2% है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अति उच्च, उच्च, औसत से उच्च, औसत, औसत से निम्न, निम्न एवं अति निम्न 'कथित स्व' रखने वाले कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के समग्र स्नातकों का प्रतिशत क्रमश: 10.22%, 23.11%, 32.22%,25.11%, 6.44%, 2%. एवं 0.89% है।

शून्य परिकल्पना Ho1: " अध्ययनरत स्नातकों का कथित स्व (Perceived self) अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भर नहीं करता है।" का सत्यापन ।

सारणी-4-अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व का अकादमिक क्षेत्र पर निर्भरता की जांच के लिए काई वर्ग परीक्षण हेतु सारिणी

	अकादमिक क्षेत्र (Academic Stream)				
कथित स्व का स्तर	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	वाणिज्य वर्ग	योग	काई वर्ग परीक्षण
अति उच्च	15 (15.33)	21 (15.33)	10 (15.33)	46	23.595*
उच्च	34 (34.67)	44 (34.67)	26 (34.67)	104	
औसत से उच्च	43 (48.33)	45 (48.33)	57 (48.33)	145	
औसत	49 (37.67)	29 (37.67)	35 (37.67)	113	
औसत से निम्न +निम्न +अति निम्न	09 (14)	11 (14)	22 (14)	42	
योग	150	150	150	450	

( ) प्रत्याशित आवृत्ति प्रकट करता है।

* काई वर्ग परीक्षण का मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 8 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या: अध्ययनरत् स्नातकों के कथित स्व का अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भरता की जाँच के लिए परिगणित काई वर्ग परीक्षण (Chi-square test) का मान (23.595) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 8 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक मान प्रकट करता है। अत: शून्य परिकल्पना "अध्ययनरत स्नातकों का 'कथित स्व' अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर नहीं करता है।" .05 सार्थक स्तर एवं 8 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत (Reject) किया जाता है। दूसरे शब्दों में अध्ययनरत स्नातकों का 'कथित स्व' (Perceived self) अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर करता है।

शून्य परिकल्पना Ho2 : "अध्ययनरत स्नातकों का आदर्शात्मक स्व, अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भर नहीं करता है।" का सत्यापन

सारिणी-5- अध्ययनरत स्नातकों के आदर्शात्मक स्व का अकादमिक क्षेत्र पर निर्भरता की जाँच के लिए काई वर्ग परीक्षण हेतु सारिणी ।

अकादमिक क्षेत्र (Academic Stream)

आदर्शात्मक स्व का स्तर	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	वाणिज्य वर्ग	योग	काई वर्ग परीक्षण
अति उच्च	25 (19.33)	15 (19.33)	18 (19.33)	58	20.0523* (Significant at .05 l.s. and 10 df)
उच्च	22 (17.67)	17 (17.67)	14 (17.67)	53	
औसत से उच्च	18 (23.67)	32 (23.67)	21 (23.67)	71	
औसत	43 (52.67)	57 (52.67)	58 (52.67)	158	
औसत से निम्न	23 (24.23)	24 (24.23)	26 (24.23)	73	
निम्न +अति निम्न	19 (12.33)	05 (12.33)	13 (12.33)	37	
योग	150	150	150	450	

() प्रत्याशित आवृत्ति प्रकट करता है

*काई वर्ग परीक्षण पर प्राप्त मान है जो .05 सार्थकता स्तर (l. s.) एवं 10 स्वतंत्रांश (df) पर सार्थक है

* **विश्लेषण एवं व्याख्या-** अध्ययनरत स्नातकों के "आदर्शात्मक स्व' (Ideal Self) का अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य पर निर्भरता की जाँच के लिए परिगणित काई वर्ग परीक्षण का मान (20.0523) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 10 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक मान प्रकट करता है। अतः शून्य परिकल्पना "अध्ययनरत स्नातकों का आदर्शात्मक स्व" उनके अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर नहीं करता है।" .05 सार्थकता स्तर एवं 10 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत किया जाता है। दूसरे शब्दों में अध्ययनरत स्नातकों का आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) उनके अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर करता है।

शून्य परिकल्पना Ho3: "अध्ययनरत स्नातकों का सामाजिक स्व (Social self) अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भर नहीं करता है।" का सत्यापन

सारिणी 6- अध्ययनरत स्नातकों के सामाजिक स्व का अकादमिक क्षेत्र पर निर्भरता की जांच हेतु सारिणी

अकादमिक क्षेत्र (Academic Stream)					
सामाजिक स्व का स्तर	कला वर्ग	विज्ञान वर्ग	वाणिज्य वर्ग	योग	काई वर्ग परीक्षण
अति उच्च + उच्च	15 (15.33)	19 (15.33)	12 (15.33)	46	5.0567# (Not Significant at .05 l.s. & 6 df)
औसत से उच्च	28 (24.33)	21 (24.33)	24 (24.33)	73	
औसत	68 (64)	63 (64)	61 (64)	192	
औसत से निम्न +निम्न +अति निम्न	39 (46.33)	47 (46.33)	53 (46.33)	139	
योग	150	150	150	450	

() प्रत्याशित आवृत्ति प्रकट करता है।

काई वर्ग परीक्षण पर प्राप्त मान है, जो .05 सार्थकता स्तर एवं 6 स्वतंत्रांश पर सार्थक नहीं है।

विश्लेषण एवं व्याख्या: अध्ययनरत स्नातकों के सामाजिक स्व का अकादमिक क्षेत्र (कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भरता की जाँच के लिए परिगणित काई वर्ग परीक्षण का मान (5.0567) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 6 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अर्थात सार्थक मान नहीं प्रकट करता है। अतः शून्य परिकल्पना "अध्ययनरत स्नातकों का सामाजिक स्व उनके अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर नहीं करता है।" .05 सार्थकता स्तर एवं 6 स्वतंत्रांश पर स्वीकृत किया जाता है। दूसरे शब्दों में अध्ययनरत स्नातकों का सामाजिक स्व उनके अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर नहीं करता है।

सारिणी 7: कला स्नातक छात्रों के कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) एवं सामाजिक स्व (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन

कला स्नातक छात्र	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	47.75 93.80	6.98 18.68	2.30	20.02*
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	93.80 58.81	18.68 9.41	2.42	14.46*
कथित स्व (Perceived Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	47.75 58.81	6.98 9.41	1.35	5.97*

* Represents t value which is significant at .05 l.s and 148 d.f.

* टी मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला स्नातक छात्रों के कथित स्व का माध्य (47.75) तथा मानक विचलन (6.98) है तथा आदर्शात्मक स्व (Ideal self) का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 93.80 एव 18.68 है। कला स्नातक छात्रों के सामाजिक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 58.81 तथा 9.41 है। तथा कला स्नातक छात्रों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व के माध्य में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 20.02 है जो 148 स्वतंत्रांश एवं .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान (1.96) से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। अत: शून्य परिकल्पना 'कला स्नातक छात्रों के आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व के माध्य में सार्थक अंतर नहीं है", .05 सार्थकता स्तर, एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत की जाती है।

कला स्नातक छात्रों के आदर्शात्मक स्व (Ideal self) एवं सामाजिक स्व (social self) में अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 14.46 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर

सारणी मान (1.96) से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना "कला स्नातक छात्रों के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है", .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत की जाती है। इसी प्रकार कला स्नातक छात्रों के सामाजिक स्व एवं कथित स्व में अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 5.97 प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना " कला वर्ग के स्नातक छात्रों के सामाजिक स्व (Social self) एवं कथित स्व (Perceived self) के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।", •05. सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत की जाती है।

कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के 'कथित स्व ' एवं 'आदर्शात्मक स्व' तथा 'सामाजिक स्व' में सार्थक अंतर का होना यह प्रदर्शित करता है कि उक्त छात्रों का समायोजन अच्छा नहीं है। व्यक्ति के समायोजन को 'आदर्शात्मक स्व' एवं 'कथित स्व' का अन्तर प्रभावित करता है। रोजर (1959) ने अधिकतम समायोजन (optimum Well-being) के लिए 'आदर्शात्मक स्व एवं 'कथित स्व' के सर्वांगसम (Congruence) होने पर बल दिया है। हिंगिन (Higgins) (1987) ने सेल्फ डिसक्रिपेन्सी का प्रत्यय प्रतिपादित किया तथा निर्दिष्ट किया कि 'आदर्शात्मक स्व एवं 'कथित स्व' का विभेद (Discripancies) सांवेगिक तनाव (Emotion Distress) एवं कुसमायोजन (Maladjustment) को बढ़ाता है।

नुरिस (Nurius) (1986) ने आत्म सम्प्रयय के गत्यात्मक प्रकृति को निर्दिष्ट किया जो उद्देश्य निर्धारण (Goal Setting) एवं समायोजन (Adjustment) को प्रभावित करता है। कार्बर एवं सीअर (Carver and Scheir) (1998) ने सेल्फ रेगुलेशन प्रासेस(Self-Regulation Pocess) के अन्वेषण में आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व (Ideal Self and Perceived self) के संरेखण (Alignment) में उद्देश्य निर्देशित व्यवहार (Goal directed behaviour) की भूमिका पर बल दिया।

सारणी 8 : कला स्नातक छात्राओं के, कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक, स्व (Ideal Self) एवं सामाजिक स्व (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन

कला स्नातक छात्राएं	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	49.23 109.59	9.15 17.99	2.33	25.91*
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	109.59 60.47	17.99 8.83	2.31	21.26*
कथित स्व (Perceived Self)	75 75	49.23 60.47	9.15 8.83	1.47	7.65*

सामाजिक स्व (Social Self)					

⁎ represents t-value which is significant at .05 l.s and 148 df.

⁎ टी मान प्रकट करता है, जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है ।

विश्लेषण एवं व्याख्या- प्रस्तुत सारणी में अध्ययनरत कला स्नातक छात्राओं के कथित स्व का माध्य (49.23) एवं मानक विचलन (9.15) तथा आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 109.59 तथा 17.99 प्रदर्शित है। उक्त छात्राओं के सामाजिक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 60.47 एवं 8.83 है। कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (25.91) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है।

अत: शून्य परिकल्पना "अध्ययनरत कला स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।".05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत (Reject) किया जाता है। कला स्नातक छात्राओं के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (21:26) है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना " अध्ययनरत कला स्नातक छात्राओं के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।" .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत (Reject) किया जाता है। इसी प्रकार, कला स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (7.65) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना "अध्ययनरत कला स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।", .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत किया जाता है।

कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर का होना यह प्रदर्शित करता है, कला वर्ग की अध्ययनरत स्नातक छात्राओं का समायोजन बेहतर / अच्छा नहीं है।

सारणी 9 : विज्ञान स्नातक छात्रों के कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) एवं सामाजिक स्व (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन

विज्ञान स्नातक छात्र	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	50.00 96.73	7.79 10.24	1.49	31.34⁎
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	96.73 55.79	10.24 8.57	1.54	26.58⁎

कथित स्व (Perceived Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	50.00 55.79	7.79 8.57	1.34	4.32*

* Represents t-value which is significant at .05 l.s. and 148df

* टी-मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि अध्ययनरत विज्ञान स्नातक छात्रों के 'कथित स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 50.0 एवं 7.79 है तथा उक्त छात्रों के 'आदर्शात्मक स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 96.73 तथा 10.24 है। विज्ञान स्नातक छात्रों के 'सामाजिक स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 55.79 तथा 8.57 है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (31.34) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है अर्थात सार्थक अंतर प्रकट करता है। उक्त छात्रों के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (4.32) है । जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर यह प्रकट करता है कि उक्त छात्रों का समायोजन अच्छा नहीं है।

सारणी 10: विज्ञान स्नातक छात्राओं के कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक स्व (Ideal self) एवं सामाजिक स्व (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन-

विज्ञान स्नातक छात्राएं	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	49.56 104.60	9.05 18.66	2.39	23.029*
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	104.60 60.32	18.66 9.53	2.419	18.305*
कथित स्व (Perceived Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	49.56 60.32	9.05 9.53	1.52	7.0789*

* represents t-value which is significant at.05 l.s and 148 df on two tailed test.

" * टी मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या: सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि विज्ञान वर्ग की स्नातक अध्ययनरत छात्राओं के 'कथित स्व' का माध्य एवं मानक विचलन ऊमश; 49.56 एवं 9.05 है। तथा 'आदर्शात्मक स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 104.60 तथा 18.66 है। उक्त छात्राओं के 'सामाजिक स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 60.32 तथा 9.53 है। कथित स्व एवं आदर्शात्मक, स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (23.029) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। 'आदर्शात्मक स्व' एवं 'सामाजिक स्व' में' सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (18.305) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्टर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। इसी प्रकार, 'कथित स्व' एवं 'सामाजिक, स्व' में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (7.0789) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर तथा द्विपुच्छ परीक्षण पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। विज्ञान वर्ग की अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर उनके कुसमायोजन (Maladjustment) को प्रकट करता है।

सारणी 11: वाणिज्य स्नातक छात्रों के कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक, स्व (Ideal self) एवं सामाजिक स्व (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन-

वाणिज्य स्नातक छात्र	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	46.76 95.20	8.68 15.76	2.08	23.29*
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	95.20 55.89	15.76 8.68	2.08	18.899*
कथित स्व (Perceived Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	46.76 55.89	8.68 8.68	1.42	6.429*

* Represents t-value which is significant at .05 l.s and 148 df.

* टी-मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या- सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 46.76 एवं 8.68 है। उक्त छात्रों के आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 95.20 तथा 15.76 है। तथा सामाजिक स्व का माध्य एवं मानक विचलन

क्रमशः 55.89 तथा 8.68 है। कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (23.29) है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। इसी प्रकार आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (18.899) प्राप्त हुआ जो . 05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक अन्तर प्रकट करता है। कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (6.429) प्राप्त हुआ जो 148 स्वतंत्रांश एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर प्रकट करता है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर का होना उनके कुसमायोजन को प्रदर्शित करता है।

सारणी 12 : वाणिज्य स्नातक छात्राओं के कथित स्व (Perceived self), आदर्शात्मक स्व (Ideal self) एवं सामाजिक एव (Social Self) का तुलनात्मक अध्ययन

वाणिज्य स्नातक छात्राएं	N	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Standard Deviation)	मानक त्रुटि (Standard Error)	t value
कथित स्व (Perceived Self) आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	75 75	46.40 103.40	8.33 15.47	2.03	28.078*
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	103.40 57.23	15.47 9.61	2.10	21.99*
कथित स्व (Perceived Self) सामाजिक स्व (Social Self)	75 75	46.40 57.23	8.33 9.61	1.47	7.367*

* Represents t-value which is significant at .05 l.s and 148df.

* टी मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि वाणिज्य स्नातक छात्राओं के कथित स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 46.40 एवं 8.33 है तथा आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 103.40 एवं 15.47 है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व के माध्य में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (28.078) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। अतः शून्य परिकल्पना " वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।". 05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत किया जाता है। इसी प्रकार वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों के आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 103.40 तथा 15.47 है तथा सामाजिक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 57.23 तथा 9.61 है।

आदर्शात्मक स्व एवं कथित स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (21.99) है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अत: सार्थक अन्तर प्रकट करता है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना "वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अंतर नही है", .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर अस्वीकृत किया जाता है। बाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (7.367) भी .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अत: शून्य परिकल्पना " वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं है।" .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर, अस्वीकृत किया जाता है। वाणिज्य वर्ग के, अध्ययनरत स्नातक छात्राओं के कथित स्व,आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर का होना उनके कुसमायोजन को प्रदर्शित करता है।

शून्य परिकल्पना " कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।"

शून्य परिकल्पना - "विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना "वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर नहीं है।

उक्त शून्य परिकल्पनाओं का सत्यापन

सारणी 13 - कला स्नातक छात्रों एवं छात्राओं, विज्ञान स्नातक छात्रों एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'कथित स्व' का तुलनात्मक अध्ययन

		N	माध्य	मानक विचलन	टी मान
कला स्नातक	छात्र	75	47.75	6.98	1.1137*
	छात्रा	75	49.23	9.15	
विज्ञान स्नातक	छात्र	75	50.0	7.79	0.3191*
	छात्रा	75	49.56	9.05	
वाणिज्य स्नातक	छात्र	75	46.76	8.68	0.25915*
	छात्रा	75	46.40	8.33	

* टी मान प्रदर्शित करता है जो 148 स्वतंत्रांश एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है।

विश्लेषण एवं व्याख्या : सारणी से स्पष्ट है कि कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 47.75 एवं 6.98 है। तथा कला वर्ग के अध्ययनरत छात्राओं के कथित स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 49.23 तथा 9.15 है। कला वर्ग के अध्ययनरत छात्रों एवं छात्राओं के 'कथित स्व' में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (1.1137) प्राप्त हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अर्थात सार्थक अन्तर नहीं प्रकट करता है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 50.0 एवं 7.79 तथा छात्राओं का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 49.56 तथा 9.05 है। छात्र एवं छात्राओं के

कथित स्व' के मध्य में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (.3191) है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अर्थात सार्थक अन्तर नहीं प्रकट करता है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के कथित स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 46.76 एवं 8.68 है। तथा वाणिज्य वर्ग की स्नातक छात्राओं के कथित स्व' का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 46.40 तथा 8.33. है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्र एवं छात्राओं के कथित स्व के माध्य में सार्थक अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (•25915) है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अर्थात सार्थक नहीं है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत विज्ञान स्नातक छात्र एव दाबाओं के 'आदर्शात्मक स्व' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

उपरोक्त शून्य परिकल्पनाओं का सत्यापन

सारणी 14 : अध्ययनरत कला स्नातक छात्रों एवं छात्राओं, विज्ञान स्नातक छात्रों एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक छात्रों एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' का तुलनात्मक अध्ययन ।

		N	माध्य	मानक विचलन	टी मान
कला स्नातक	छात्र	75	93.80	18.68	5.27**
	छात्रा	75	109.59	17.99	
विज्ञान स्नातक	छात्र	75	96.73	10.24	3.20**
	छात्रा	75	104.60	18.66	
वाणिज्य स्नातक	छात्र	75	95.20	15.76	3.2156**
	छात्रा	75	103.40	15.47	

** टी मान प्रदर्शित करता है जो 148 स्वतंत्रांश एवं .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक मान प्रकट करता है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के 'आदर्शात्मक स्व ' प्राप्तांकों का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 93.80 तथा 18.68 है तथा उक्त वर्ग के छात्राओं के आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 109.59 तथा 17.99 है। कला वर्ग की अध्ययनरत स्नातकों छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 5.27 है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 96.73 तथा 19.24 है। तथा इसी वर्ग के स्नातक छात्राओं के आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 104.60 तथा 18.66 है। विज्ञान की के स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक

स्व' में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (3.20) है जो .05 सार्थक स्तर एव 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है, अर्थात सार्थक अन्तर प्रकट करता है। वाणिज्य वर्ग के स्नातक छात्रों को आदर्शात्मक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 95.20 तथा 15.76 है। उक्त वर्ग के छात्राओं के आदर्शात्मक स्व का माध्य व मानक विचलन क्रमश: 103.40 तथा 15.47 है। वाणिज्य वर्ग के स्नातक छात्र एवं छात्राओं के आदर्शात्मक स्व में, सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान (3.12156) है जो .05 सार्थकता, 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक अन्तर प्रकट करता है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत विज्ञान स्नातक छात्र एव छात्राओं के 'सामाजिक स्व' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

शून्य परिकल्पना : अध्ययनरत वाणिज्य वर्ग के स्नातक छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक स्व ' के माध्य में सार्थक अन्तर नहीं है।

उक्त परिकल्पनाओं का सत्यापन

सारणी 15 -अध्ययनरत कला स्नातक छात्रों एवं छात्राओं, विज्ञान स्नातक छात्र एवं छात्राओं तथा वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व" का तुलनात्मक अध्ययन।

		N	माध्य	मानक विचलन	टी मान
कला स्नातक	छात्र	75	58.81	9.41	1.11
	छात्रा	75	60.47	8.83	
विज्ञान स्नातक	छात्र	75	55.79	8.57	3.06**
	छात्रा	75	60.32	9.53	
वाणिज्य	छात्र	75	55.89	8.68	0.0896
स्नातक	छात्रा	75	57.23	9.61	

** टी मान प्रकट करता है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सार्थक है।

विश्लेषण एवं व्याख्या - सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि कला स्नातक छात्रों के सामाजिक स्व' प्राप्तांकों का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 58.81 तथा 9.41 है। तथा उक्त वर्ग की छात्राओं का माध्य एवं मानक विचलन क्रमश: 60.47 तथा 8.83 है। कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी मान 1.11 है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से कम है। अर्थात सार्थक अन्तर नहीं प्रकट करता है।

विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों के सामाजिक स्व का माध्य एवं मानक विचलन क्रमशः 55.79 तथा 8.57है। तथा विज्ञान वर्ग के स्नातक छात्राओं के कथित स्व का माध्य एवं मानक विचलन स्व क्रमश: 60.32 तथा 9.53 है। विज्ञान वर्ग के छात्रों एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में अन्तर ज्ञात करने के लिए

परिगणित टी मान 3.06 है जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर सारणी मान से अधिक है। अर्थात सार्थक मान प्रकट करता है।

वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातक छात्रों एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में अन्तर ज्ञात करने के लिए परिगणित टी-मान (.0896) प्राप्ट हुआ जो .05 सार्थकता स्तर एवं 148 स्वतंत्रांश पर, सारणी मान से कम है अर्थात सार्थक अन्तर नहीं प्रकट करता है।

सारणी -16 - कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन-

	कथित स्व (Perceived Self)	आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	सामाजिक स्व (Social Self)
कथित स्व (Perceived Self)	1	.375**	.187**
आदर्शात्मक स्व (Ideal Self)	.375**	1	.452**
सामाजिक स्व (Social Self)	.187**	.452**	1

** पियरसन गुणनआघूर्ण सहसम्बन्ध प्रकट करता है जो .01 सार्थकता स्तर एवं द्विपुच्छ परीक्षण पर सार्थक सहसम्बन्ध है।

(** represents Pearson Product Moment Correlation which is significant at .01 level of significance in case of two tailed test.)

विश्लेषण एवं व्याख्या- कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के कुल (450) अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व के मध्य धनात्मक सह सम्बन्ध (.375) पाया गया जो .०१ सार्थकता स्तर पर सार्थक सहसम्बन्ध प्रकट करता है। इसी प्रकार, कथित स्व एवं सामाजिक स्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध (.187) पाया गया जो .01 सार्थकता स्तर एवं दिपुच्छ परीक्षण पर सार्थक सहसम्बन्ध है।

सामाजिक स्व एवं आदर्शात्मक स्व के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध (.452) प्राप्त हुआ जो .01 सार्थकता स्तर पर एवं द्विपुच्छ परीक्षण पर सार्थक मान प्रकट करता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययनरत स्नातकों के कथित स्व', 'आदर्शात्मक स्व' एवं 'सामाजिक स्व' के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसम्बन्ध है।

निष्कर्ष- अध्ययन का निष्कर्ष इस प्रकार है -

1. औसत से उच्च, उच्च या अति उच्च 'आदर्शात्मक स्व' वाले कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातको की संख्या (प्रतिशत में) 43.34% है। औसत स्तर के आदर्शात्मक स्तर वाले कला स्नातकों की संख्या (प्रतिशत में) 28.67%. है तथा औसत से निम्न, निम्न या अतिनिम्न आदर्शात्मक स्व) वाले कला- स्नातकों की संख्या 27.99% है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों की संख्या (प्रतिशत में) जो औसत से उच्च, उच्च या अति उच्च आदर्शात्मक स्व' रखते है 42.66% है।, औसत आदर्शात्मक स्व वाले विज्ञान वर्ग के स्नातकों की संख्या 38% है जबकि औसत से निम्न, निम्न या अति निम्न आदर्शात्मक स्व' वाले विज्ञान स्नातकों की संख्या 19.34% है। वाणिज्य वर्ग के

अध्ययनरत स्नातकों में औसत से उच्च, उच्च या अति उच्च तथा 'औसत' एवं 'औसत से निम्न, निम्न या अतिनिम्न' आदर्शात्मक स्व वाले स्नातक छात्रों की संख्या क्रमश: 35.33%, 38.67 एवं 26% है।

2. कला वर्ग के अध्ययनरत स्नातक जिनका सामाजिक स्व अति उच्च, उच्च या औसत से उच्च, 'औसत' तथा ' औसत से निम्न, निम्न या अति निम्न है उनकी संख्या (प्रतिशत में) क्रमश: 28.67%, 45.33% एवं 26% है। विज्ञान वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों का उक्त तीन वर्गों में संख्या (प्रतिशत में) क्रमश: 26.67%, 42% एव 31.33% है। वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों का उक्त तीन वर्गों में संख्या क्रमश: 24%, 40.67% एवं 35.33% है।
3. 'औसत से उच्च; उच्च एवं अति उच्च' कथित स्व वाले कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों की संख्या क्रमश: 61.34%; 73.33 प्रतिशत तथा 62% है। औसत स्तर के कथित स्व वाले कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों की संख्या क्रमश: 32.67%; 19.33% तथा 23.33 प्रतिशत है। 'औसत से निम्न, निम्न या अति निम्न कथित-स्व वाले कला वर्ग, विज्ञान वर्ग एवं वाणिज्य वर्ग के अध्ययनरत स्नातकों की संख्या क्रमश: 6%, 7.34% तथा 14.67% है।
4. 'कथित स्व' अध्ययनरत स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र (यथा- कला, विज्ञान एवं वाणिज्य) पर निर्भर करता है। अर्थात स्नातक विद्यार्थियों का 'कथित स्व' उनके अकादमिक क्षेत्र से स्वतन्त्र नहीं है। इसी प्रकार 'आदर्शात्मक स्व' भी स्नातकों के अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर करता है। जबकि 'सामाजिक स्व' अकादमिक क्षेत्र पर निर्भर नहीं करता है।
5. कला स्नातक छात्रों के कथित स्व एवं आदर्शात्मक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार उक्त वर्ग के आदर्शात्मक स्व,एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया तथा सामाजिक एवं कथित स्व में भी सार्थक अन्तर पाया गया । कला स्नातक छात्राओं के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया। विज्ञान स्नातक छात्रों के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया। विज्ञान स्नातक छात्राओं के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया। इसी प्रकार वाणिज्य स्नातक छात्रों के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया। तथा वाणिज्य स्नातक छात्राओं के कथित स्व, आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व, में सार्थक अन्तर पाया गया
6. लिंग के आधार पर स्नातक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्रों एवं छात्राओं के कथित स्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि स्नातक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के 'आदर्शात्मक स्व' में सार्थक अन्तर पाया गया। कला स्नातक छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसी प्रकार वाणिज्य स्नातक छात्र एवं छात्राओं के 'सामाजिक स्व' में सार्थक, अन्तर नहीं पाया गया जबकि विज्ञान स्नातक छात्र एवं छात्राओं के सामाजिक स्व में सार्थक अन्तर पाया गया।
7. स्नातकों के कथित स्व', 'आदर्शात्मक स्व एवं सामाजिक स्व में सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

संदर्भ सूची

1. Hurlock, Elizabeth B. Personality Elizabeth, Heateck cald Developmat" Tata McGrowhill, p. 21-22.
2. Sixth Survey of Educational Research (1993-20) volume II, NCERT p 308-309.
3. अग्रवाल, डा० माधवी एवं तिमोतिया, डा० अनिल कुमार (फरवरी 2019) "सेल्फ कॉन्सेप्ट आफ सेकेण्डरी लेवल स्ट्डेन्ट इन डेल्ही/डेल्ही (एन से आर) जर्नल आफ इमरजिंग टेक्नोलाजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च वाल्यूम - 6, इश्यू 2, पृष्ठ संख्या -693-702
4. आर, मुथियालगन मार्टिन एवं के. माहेश्वरी (2022)" सिग्निफिकेंस आफ सेल्फ कॉन्सेप्ट अमोंग एडोलसेंट स्कूल स्टुडेन्ट. जर्नल ऑफ़ पॉजिटिव स्कूल साइकोलॉजी. वॉल्यूम 6, इश्यू-4, 3669-3675
5. गुप्ता, राजेन्द्र कुमार (अप्रैल 2017)" कला संकाय एवं विज्ञान संकाय के सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन" एशियन जर्नल आफ एजुकेशनल रिसर्च एक टेक्नोलाजी वाल्युम-7(2), पृष्ठ संख्या 32-37
6. गोयल, प्रतिभा एवं मिश्रा, डॉ.किरन (मई 2019) " माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के आत्म-प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन. इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन शोसल साइन्स, वॉल्युम-9, इश्यू-5, पृ. सं. 2494-2499 http://www.ijmra.ms.
7. चार, सजल कुमार एवं करमाकर, प्रोदीप एवं महतो, सुशंता एवं अधिकारी, समीर रंजन (दिसंबर 2022)" ए डिस्क्रिप्टिव सर्वे आन द सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ द स्कूल गोइंग एडोलसेंट ऑफ पुरुलिया डिस्ट्रिक्ट " इन्टरेशनल जर्नल फार रिसर्न इन अप्लाइड साइंस एंड इंजीनियरिंग टेक्नोलाजी वाल्यूम -10 इश्यू-12 पृष्ठ संख्या 2164-2167
8. नायक, डॉ प्रमोद कुमार एवं शर्मा, श्रीमती सुनीला (2017) " ग्रामीण शहरी क्षेत्र विद्यार्थियों की सांवेगिक बुद्धि तथा आत्म-संप्रत्यय का अध्ययन. काव इन्टरनेशनल जर्नल आफ इकोनोमिक्स कॉमर्स एण्ड बिजनेस मैनेजमेन्ट, पृष्ठ संख्या 67-72, www.kaavpublications.org.
9. मलिक, डॉक्टर रंजू (नवंबर 2015) अ स्टडी ऑफ सेल्फ कांसेप्ट आफ 10 थ क्लास स्टूडेंट आफ वर्किंग एंड नान वर्किंग मदर. इंटरनेशनल जर्नल आफ एडवांस्ड रिसर्च इन मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेस, वाल्यूम-4, संख्या ।।, पृष्ठ संख्या 90-97.
10. राय, स्मृतिकाना एवं साहा, प्रोफेसर बीरबल (जनवरी 2025)" एक्सप्लोरिंग द सेल्फ कॉन्सेप्ट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट लेवल स्टूडेंट : ए क्रिटिकल स्टडी " इंटरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च एंड रिव्यु वाल्युम-10, इश्यू-1, पृष्ठ संख्या 1-61

****

आत्मसंप्रत्यय और शैक्षिक सफलता कला...,ान एवं वाणिज्य स्नातकों के आत्मबोध का एक विश्लेषण (1) (1).docx

ORIGINALITY REPORT

8%	5%	2%	6%
SIMILARITY INDEX	INTERNET SOURCES	PUBLICATIONS	STUDENT PAPERS

PRIMARY SOURCES

1	Submitted to Pacific University Student Paper	3%
2	Submitted to Khwaja Moinuddin Chishti Language University Student Paper	2%
3	oldror.lbp.world Internet Source	1%
4	www.socialresearchfoundation.com Internet Source	1%
5	Submitted to Lovely Professional University Student Paper	1%
6	assets.vmou.ac.in Internet Source	1%

Exclude quotes	On	Exclude matches	< 1%
Exclude bibliography	On		